



आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख साप्ताहिक पत्र

मूल्य : 2 रु.
वर्ष 71/ अंक : 30
संस्थापित : 1960/883/115
2 नवम्बर 2014
कल्याणनम्बर : 1889
वार्षिक : 100 रु.
आजीवन : 1000 रु.
सुरक्षा : 2292926, 5062726

जालन्धर

वर्ष-71, अंक : 30, 30/2 नवम्बर 2014 तदनुसार 17 कार्तिक संवत् 2071 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

मीठी नजर

स्ले० क्यामी वेदानन्द (क्यानन्द) तीर्थ

तव स्वादिष्टाग्ने संदृष्टिरिदा चिदहन् इदा चिदक्तोः॥
श्रिये रुक्मो न रोचते उपाके॥

-ऋ. 4/10/5

शब्दार्थः हे अग्नेः=अग्ने ! तव= तेरी स्वादिष्टा= स्वादिष्ट अत्यन्त स्वादु= अतिशय मीठी **संदृष्टिः** = उत्तम दृष्टि, नेक नजर इत् =ही अहन्+चित्+आ=दिन से लेकर **अक्तोः**=चित्-आ=रात तक इत्=भी रुक्मः+न= सुवर्ण की भान्ति **उपाके** =समीप में **श्रिये**= कल्याण के लिये **रोचते**= चमक रही है।

व्याख्या= कविजन बताते हैं, दृष्टि बहुत ऋष्टि है, इससे कइयों को घायल होते सुना गया है। कामी जनों की ऐसी बहुत सी कथाएं हैं जिनमें कमनीय के एक दृष्टि-निक्षेप से कामी उन्मत्त हो गया।

क्रोधी मनुष्य की दृष्टि लाल हो जाती है, उसकी आंख से आंख मिलाना कठिन हो जाता है।

बालक जो अभी मनोगत भावों को पूर्णरूप से व्यक्त नहीं कर सकता, विह्वल होकर जब माता को देखता है, तो माता की ममता कैसी प्रदीप्त होती है? मां की इस दशा का मूल क्या है? बालक की दृष्टि।

क्रोध या उदासी के भाव वहीं विलीन हो जाते हैं। किस के प्रभाव से? माता की ममता भरी स्नेहसिक्त संदृष्टि से।

दृष्टि की बड़ी महिमा है, यह हंसतों को रूला देती है, रोतों को हंसा देती है, मित्र को शत्रु बना देती है और शत्रु को प्राणपण से प्रीति करने वाला सुहृद् बना देती है।

सन्तजन सुनाते हैं, किसी महापुरुष का कृपा-कटाक्ष अधम-से-अधम पुरुष का बेड़ा पार कर देता है। उसकी चित्त-नदी, जिसका प्रवाह पाप सागर की ओर था, प्रवाह बदल कल्याण-समुद्र की ओर बहने लगती है।

मनोविज्ञान के आचार्य बतलाते हैं कि दृष्टि भीतर के मनोभावों की निदर्शिका होती है तभी संसाद में ललचाई आंख, क्रोध से लाल आंख, प्रेम भरे नेत्र, मदमाते अलसाते नयन, आदि प्रयोग होते हैं। भिन्न भिन्न भावों की अभिव्यक्ति के समय आंख में कोई एक अवर्णनीय सा परिवर्तन होता है। ज्ञानी और मूढ़ बिना सिखाए इसे जानते हैं।

इस मनोवैज्ञानिक आकृति विज्ञानमय दृष्टिभेद को लक्ष्य कर कामना की गई है।

तव स्वादिष्टाग्ने संदृष्टिः।

अग्ने ! तेरी अत्यन्त मीठी नजर

मार्ग दिखाने वाला आंख मैली कर ले, तो समझ लो कि यह अमार्ग-कुमार्ग में पटकेगा। गुरु की कुदृष्टि हुई तो जान लो विद्या में बाधा आई। गुरुओं के गुरु की यदि सन्दृष्टि न रही तो फिर क्या गति होगी? जिसके

एक कुदृष्टि-निपात से यह समस्त समाप्त हो सकता है, उसकी कुदृष्टि से कितना अनिष्ट हो सकता है? अतः याज्वा है-

तव स्वादिष्टाग्ने संदृष्टिः।

इस वेदमंत्र से यह प्रतीत होता है कि भगवान की तो सदा सन्दृष्टि ही सन्दृष्टि चमक रही है, फिर संसार क्यों व्याकुल है? उसकी सन्दृष्टि की ओर पृष्ठ कर देने से। दृष्टि सामने होने पर ही प्रभाव करती है। जब हमने पीठ फेर ली, या आंख मूंद ली, तब फिर सन्दृष्टि हमारी दृष्टि से ओझल हो गई और हम सन्दृष्टि के पुनीत फल से वंचित हो गये किन्तु जिन्होंने तेरी सन्दृष्टि पा ली, वे-

नामानि चिद्विधे यज्ञियानि भद्राया ते रणयन्त संदृष्टौ॥

-ऋ. 6/1/4

तेरी भली सन्दृष्टि में आनन्द करते हुये पूज्य नामों को धारण करते हैं। भगवान की सन्दृष्टि-भद्र सन्दृष्टि-स्वादिष्ट जिन पर पड़ गई, उनके नामों की पूजा न होगी, तो किन की होगी?

जो भद्र है, वह स्वादिष्ट है। अभद्र, अमंगल किसे स्वादु लग सकता है? वह तो सब को कटु लगता है।

प्रभो हमें क्या तेरी सन्दृष्टि न दीखेगी? हमारे नेत्रों का पर्दा तू ही हटाएगा। प्रभो ! यत्ते रूपं कल्याणतमं तत्ते पश्यामि। इशो. 16

तेरा तेजोमय अतिशय कल्याणकारी जो रूप है उसे मैं देखता हूं।

प्रभो पश्यामि कहने का अधिकार कब मिलेगा?

-स्वाध्याय संदोह से साभार

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

स्वाध्याय के लाभ

ले० स्वामी दीक्षानन्द सरस्वती

(गतांक से आगे)

वह सबके लिए अवध्य हो जाता है, सभी का रक्षणीय हो जाता है, उसे निर्भयता प्राप्त हो जाती है। उसे जहां अज्येयता का वरदान मिल जाता है, वहां साथ ही उसे अवध्यता का वर भी स्वतः प्राप्त हो जाता है। अजातशत्रु का शत्रु कौन ? भला अजातशत्रु को भय कैसा ?

इस प्रकार शतपथकार ने स्वाध्याय की महिमा बताते हुए सोलह लाभ बताए हैं-आठ लाभ और आठ उपलाभ जो निम्न हैं-

- क. 1. युक्तमना भवति;
2. अपराधीनो भवति;
3. अहरहर्थां साधयते;
4. सुखे स्वपिति;
- ख. 5. परम चिकित्सक आत्मनो भवति (एवं स्वस्थात्म-नश्च);
6. इन्द्रियसंयमो भवति;
7. एकारामता भवति;
8. प्रज्ञावृद्धिर्भवति; प्रज्ञया पुनः-
- ग. 9. ब्राह्मण्यम्
10. प्रतिरूपचर्या,
11. यशः
12. लोकपक्तिः लोकपक्वतेश्च-
- घ. 13. अर्चया; ब्राह्मणं भुनक्ति
14. दानेन;
15. अज्येयतया;
16. अवध्यतया।

एक दृष्टि से इन्हें स्वाध्याय के चतुरंग, चतुर्मुखी लाभ भी कहा जा सकता है। प्रस्तुत वर्गीकरण में दोनों दृष्टियां प्रत्यक्ष होती हैं-यदि उपरिवर्णित सोलह लाभों को सोलह कलाएं मान लिया जाए तो व्यक्ति स्वाध्याय करने से ही सोलह कला सम्पन्न पुरुषोत्तम कहलाएगा।

12. स्वाध्याय-सर्वस्व स्वाध्यायशील व्यक्ति-

1. योगी की तरह मनस्वी हो जाता है
2. पर-मुखापेक्षी नहीं होता
3. न आर्थिक दृष्टि से न अन्तर्दृष्टि के अभाव से कष्ट पाता है।
4. वह सुख की नींद सोता है;
5. कष्ट में अपना उपचार भी आप;
6. इन्द्रियसंयमी
7. नित्य परमानन्द में लीन

8. प्रज्ञावृद्धि; अपनी ही नहीं
9. हर किसी की आवाज
10. हर किसी के लिए एक आदर्शवत्-राष्ट्रपुरुष
11. जिसकी कीर्ति दिग्दिगन्त में फैलती जाती है
12. लोग उसके पास उड़े चले आते हैं
13. उसकी अर्चा करने
14. उसके लिए भेंट चढ़ाने
15. उसकी अपरिग्रहता पर मुग्ध होने
16. उसकी अहिंस्यता से स्वयं अभय होने के लिए।

स्वाध्याय क्यों ?

लोकाभ्युदय के लिए

शतपथ-ब्राह्मण के एकादश काण्ड में स्वाध्याय की महिमा का वर्णन करते हुए लिखा है कि जो विद्वान् प्रतिदिन स्वाध्याय-यज्ञ करता है, उसे द्रव्ययज्ञ से होने वाले फल की अपेक्षा, त्रिगुणित फल मिलता है। कोई यजमान द्रव्ययज्ञ की समाप्ति पर धन से परिपूर्ण पृथिवी को दान देकर यदि एक लोक को जीतता है, तो स्वाध्याय-यज्ञ को करने वाला तीनों लोकों को जीतता है। लिखा है-"यावन्तं ह वा इमां पृथिवीं वित्तेन पूर्णां ददँल्लोकं जयति त्रिस्तावन्तं जयति।" (शतपथ० ११।१।॥३) धन से परिपूर्ण पृथिवी का दान देने पर जितने लोक जीते जा सकते हैं, स्वाध्यायशील व्यक्ति ठीक उनसे तिगुने लोकों को जीत लेता है।

यदि द्रव्ययज्ञ करने वाला एकमात्र भूलोक को जीतता है, तो स्वाध्याय-यज्ञ करने वाला भूर् भुवर् और स्वर् लोकत्रय को जीतता है। यदि सामान्य यज्ञ करने वाला मनुष्य लोक को जीतता है, तो स्वाध्याय-यज्ञ करने वाला मनुष्य लोक, पितृ लोक और देव लोक तीनों को जीतता है। यदि वह मनुष्य लोक (ब्रह्मचर्याश्रम) को जीतता है तो स्वाध्याय-यज्ञ करने वाला मनुष्य लोक (ब्रह्मचर्याश्रम), पितृलोक (वानप्रस्थाश्रम), देवलोक (सन्यास-आश्रम) तीनों को जीत लेता है।

अक्षयलोक :

फिर आगे लिखते हैं-"भूयांसं चाक्षय्यं (लोकं जयति) न एवं विद्वान् अहरहः स्वाध्यायमधीते"

(शतपथ० ११।५।६।३) जो विद्वान् इस प्रकार दिन-प्रतिदिन स्वाध्याय करता है, वह उससे भी बढ़कर अक्षयलोक को जीतता है। अक्षयलोक का अर्थ न क्षीण होने वाला, ब्रह्मलोक है। ब्रह्म का अर्थ यदि वेद लिया जाए, तो स्वाध्यायशील व्यक्ति का तो वेद ही अक्षयलोक है। वही उसका परमलोक है। सोते-जागते वेद ही उसके चिन्तन का विषय है-निरन्तर उसी का मनन, उसी का चिन्तन। इस प्रकार जहां वह जागतिक लोकत्रय को जीत लेता है, वहां वह पारमार्थिक अक्षय ब्रह्मलोक को जीत लेता है।

पुनर्मृत्यु से मुक्ति-

"अति ह वै पुनर्मृत्युं मुच्यते।

गच्छति ब्राह्मणः सात्मताम्।"

स्वाध्यायशील व्यक्ति पुनर्मृत्यु से मुक्त हो जाता है। वह ब्रह्म-ईश्वर के समान। (परान्तकाल तक) जन्म-मृत्यु बन्धन से छूट जाता है। इस एक बार के प्रयत्न से यदि उसे ब्राह्मणत्व प्राप्त हो गया तो उसका ब्राह्मणत्व मरता नहीं। वह पुनर्जन्म धारण करके भी वहीं से कार्य आरम्भ कर देता है, क्योंकि स्वाध्याय से ब्रह्म की सात्मता को प्राप्त कर लेता है, वेद को आत्मसात् कर लेता है, ब्रह्म (आनन्द) को आत्मसात् कर लेता है, इसलिए पुनर्मृत्यु से छूट जाता है। उसे द्विज बनने के लिए पुनः आचार्य (अर्थात् मृत्यु) के बन्धन में नहीं आना पड़ता। वही आशय "अति ह वै पुनर्मृत्युं मुच्यते" का है।

इसी आशय को राजर्षि मनु ने अपने शब्दों में यूँ व्यक्त किया है-
वेदाभ्यासेन सततं शौचेन तपसैव च।

अद्रोहेण च भूतानां जातिं स्मरति पौर्विकीम्॥

मनु० ४।२४८।

निरन्तर वेद का स्वाध्याय करने शुचि रहने, तप करने और जीवों के साथ द्रोह न करने से, 'अपने' पूर्वजन्म को जान लेता है। यह पूर्वजन्म को जान लेना ही पुनर्मृत्यु से मुक्ति है।

मनु आगे लिखते हैं-

पौर्विकी संस्मरज्ञातिं ब्रह्मैवाभ्यसते पुनः।

ब्रह्माभ्यासेन चाजस्रमनन्तं सुखमश्नुते॥

मनु० ४।१४९

पूर्वजन्म को स्मरण करता हुआ

पुनः नित्य वेद का ही अभ्यास करता है। वेदाभ्यास से (स्वाध्याय से) अनन्त सुख भोगता है। शतपथ के "अक्षय्यं लोकं जयति" "ब्राह्मणः सात्मतां गच्छति" को मनु के "ब्रह्माभ्यासेन चाजस्रम् अनन्तं सुखमश्नुते" से मिलाकर आशय समझ लेना चाहिए।

स्वाध्याय-यज्ञ की आहुतियां-

जिस प्रकार द्रव्य-यज्ञ में पय, आज्य, स्नेह, मधु आदि की आहुतियां दी जाती हैं तद्वत् स्वाध्याय-यज्ञ में भी ऋग्, यजु, साम और अथर्ववेद को ही पयादि-आहुतियां माना है-

स्वाध्याय-यज्ञ में-

ऋग्वेद की ऋचाएं-दूध की आहुतियां हैं।

यजुर्वेद की ऋचाएं-घृत की आहुतियां हैं।

सामवेद की ऋचाएं-सोम की आहुतियां हैं।

अथर्ववेद की ऋचाएं-स्नेह की आहुतियां हैं।

जिस प्रकार दूध, घृत, सोम, स्नेह, मधु आदि की आहुतियों से देवता तृप्त होते हैं, वैसे ही स्वाध्याय-यज्ञ में ऋक्, यजुः, साम और अथर्व की ऋचारूप आहुतियों से देव तृप्त होते हैं।

जिस प्रकार साधारण यज्ञ में तृप्त हुए देव यजमान को अनेक मंगलों से तृप्त करते हैं, तद्वत् स्वाध्याय-यज्ञ में डाली गई हवियों से तृप्त हुए देव स्वाध्यायशील व्यक्ति को अनेक मंगलों से तृप्त करते हैं। लिखा है-

"स य एवं विद्वान् ऋचः अहरहः स्वाध्यायमधीते पयआहु-तिभिरेव तदेवांस्तर्पयति त ऽ एनं तृप्तास्तर्पयन्ति योगक्षेमेण, प्राणेन, रेतसा, सर्वात्मना, सर्वाभिः पुण्याभिः सम्पदिभिः, घृतकुल्या मधुकुल्याः पितृन्, स्वधा अभिवहन्ति।" (शतपथ ११।५।६।४)

वह विद्वान् जो इस प्रकार वेदचतुष्टय की ऋतारूप हवि का दान करता रहता है, उससे तृप्त होकर देव स्वाध्यायशील व्यक्ति को योगक्षेम, प्राणशक्ति, वीर्यशक्ति, सम्पूर्ण आत्म लाभ, समस्त पुण्यों और सम्पत्ति से युक्त करते हैं और (वानप्रस्थ में) पितरों को भी घृत और मधु की धाराएं पहुंचाते हैं।

योगक्षेम से तृप्त करते हैं-

देवता स्वाध्यायशील व्यक्ति को योगक्षेम से तृप्त करते हैं। योगक्षेम में दो शब्द हैं-एक योग, दूसरा क्षेम। (क्रमशः)

सम्पादकीय.....

महर्षि दयानन्द का सन्देश

इस वर्ष के निर्वाण दिवस पर महर्षि दयानन्द के पार्थिव शरीर को पंचतत्वों में विलीन हुए 131 वर्ष पूरे हो गए हैं। दीपावली के पर्व पर सभी आर्य समाजों में महर्षि दयानन्द के निर्वाण दिवस को मनाया गया। महर्षि दयानन्द की निर्वाण तिथि हर वर्ष आती है और हम इसे प्रतिवर्ष मनाते हैं। सन् 1883 में महर्षि दयानन्द जी ने इस संसार को छोड़ा था। उसके पश्चात हम प्रतिवर्ष उन्हें याद करते हुए, उनके द्वारा किए गए कार्यों को स्मरण करते हुए अपनी-अपनी श्रद्धाजलि भेंट करते हैं। केवल साल में एक बार ऋषि बोधोत्सव और निर्वाण दिवस मनाकर हम सोचते हैं कि आर्य समाज का प्रचार हो गया। परन्तु यह विचार नहीं करते कि महर्षि दयानन्द जी ने जिन कार्यों को अपने जीवन में किया है, जिन कार्यों को पूर्ण करने के लिए उन्होंने आर्य समाज की स्थापना की थी, क्या हम उन कार्यों को कर रहे हैं? ऋषि दयानन्द का बलिदान दिवस मनाते हुए हमारा यह कर्तव्य बन जाता है कि हम ऋषि दयानन्द के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयास करें। इस अवसर पर हमें एक ओर जहां महर्षि के उदात्त चरित्र एवं उपदेशों से सीख ग्रहण करनी होगी, वहां पर हमें यह देखना होगा कि इन 131 वर्षों में महर्षि को अपना आचार्य या गुरु कहने वाले आर्यजनों एवं आर्य समाज ने ऋषि के सन्देश को कहां तक कार्यान्वित किया? हमें यह भी देखना चाहिए कि हम आर्य समाज और महर्षि के प्रति अपने दायित्व एवं ऋणों से उन्मत्त हो सके हैं? संसार का उपकार करने के लिए महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज की स्थापना की थी। महर्षि दयानन्द जी का विचार था कि उनके बाद भी मानव कल्याण के कार्य होते रहें। उन्होंने गुरुडमवाद का विरोध करते हुए किसी शिष्य को अपना उत्तराधिकारी नहीं बनाया। उन्होंने अपने अधूरे कार्यों को पूर्ण करने के लिए आर्य समाज की स्थापना की थी।

महर्षि दयानन्द का बलिदान दिवस मनाते हुए हमें यह विचार करना चाहिए कि देश में स्वराज्य की प्रतिष्ठा कैसे हो? कैसे यहां फैले भ्रष्टाचार, स्वार्थवाद, अनैतिकता का अन्त हो? इस लक्ष्य की पूर्ति के लिए आर्य समाज एवं आर्यजनों का विशेष दायित्व बन जाता है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने अपने समय में सामाजिक कुरीतियों, पाखण्डों, अन्धविश्वासों को दूर करने का प्रयास किया था। आज हमें यह विचार करना है कि क्या हमने इस बार महर्षि को श्रद्धाजलि देते हुए कोई संकल्प किया है? क्या हमने महर्षि के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने का प्रयत्न किया है? आज हमें स्मरण करना होगा कि राष्ट्र में सच्ची इन्सानियत और नैतिकता की प्रतिष्ठा के लिए समस्त संसार को श्रेष्ठ बनाने के लिए महर्षि दयानन्द जी के सिद्धान्तों और मन्तव्यों का प्रचार-प्रसार करना होगा। महर्षि दयानन्द जी ने जिन कार्यों की पूर्ति के लिए अपने उत्तराधिकारी के रूप में आर्य समाज की स्थापना की थी उन कार्यों को आज आर्य समाज का लक्ष्य और उद्देश्य बनाना होगा। जब तक हम स्वयं महर्षि दयानन्द के सिद्धान्तों का पालन नहीं करेंगे, उनके आदर्शों को अपने जीवन में नहीं अपनाएंगे तब तक हम दूसरों को सही मार्ग नहीं दिखा सकते। अगर हम राष्ट्र से बुराईयों को दूर करना चाहते हैं, भ्रष्टाचार को दूर करना चाहते हैं, जाति प्रथा, दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों को दूर करना चाहते हैं तो महर्षि दयानन्द के सार्वभौम सिद्धान्तों का प्रचार प्रसार करना होगा।

131 वर्ष पूर्व दीपावली के पावन पर्व पर महर्षि ने अपना पार्थिव शरीर छोड़ दिया था। अपनी छोटी सी आयु में महर्षि ने बहुत कुछ कर दिया था। उन्होंने वेदों, वैदिक सिद्धान्तों, ऋषिकृत ग्रन्थों एवं परम्पराओं का पुनरुद्धार किया था। उन्होंने ईसाईयों और मुसलमानों के आक्रमणों से त्रस्त हिन्दू जाति को नया मनोबल दिया था। उन्होंने एक सच्चे मानवीय वैदिक धर्म की प्रतिष्ठा की थी। अकेले महर्षि दयानन्द जी सभी कुरीतियों, बुराईयों, पाखण्डों, अन्धविश्वासों के विरुद्ध लड़े थे। महर्षि दयानन्द जी ने अनेक कष्ट सहें, अनेकों बार जहर पिया, परन्तु अपने मार्ग और लक्ष्य से विचलित नहीं हुए। अन्त में उन्होंने 1883 में अपने शरीर को त्याग दिया। तब से लेकर हम आज तक केवल परम्पराओं का निर्वहन कर रहे हैं। प्रतिवर्ष महर्षि दयानन्द सरस्वती जी का बलिदान दिवस आता है, हम उसे मनाते

हैं, अपने-अपने विचारों तथा भाषणों के द्वारा उन्हें अपनी श्रद्धाजलि भेंट करते हैं। प्रतिवर्ष हम यही करते हैं। ऋषि दयानन्द के कार्य मिशन को बढ़ाने के लिए क्या करना चाहिए, उनके उद्देश्यों को, मन्तव्यों को पूरा करने के लिए क्या करना चाहिए? इसके लिए कोई कार्यक्रम तैयार नहीं करते। वर्ष भर हमें क्या करना चाहिए? इसके लिए कोई रूपरेखा नहीं बनाते। बच्चों के अन्दर किस प्रकार वैदिक सिद्धान्तों का समावेश हो, किस प्रकार उनके अन्दर नैतिक गुणों का समावेश हो, महर्षि दयानन्द अपने राष्ट्र का क्या स्वरूप देखना चाहते थे? इसके लिए हमें पूरे वर्ष के लिए कार्यक्रमों की रूपरेखा बनानी पड़ेगी। हम अपनी-अपनी आर्य समाजों तथा शिक्षण संस्थाओं में ऐसे कार्यक्रमों का आयोजन करें जिनसे वैदिक सिद्धान्तों तथा महर्षि दयानन्द के मन्तव्यों का प्रचार हो। हमारे कार्यक्रम केवल परम्पराओं का निर्वहन करना नहीं होने चाहिए बल्कि उद्देश्य पूर्ण होने चाहिए। वर्तमान समय में समाज की स्थिति को देखकर हमें आर्य समाज को और सक्रिय करने की आवश्यकता है। आर्य समाज के सिद्धान्तों और नियमों के द्वारा ही राष्ट्र का कल्याण सम्भव है। इसलिए हम सभी आर्यजनों का कर्तव्य है कि हम सभी महर्षि दयानन्द के आदर्शों को पूर्ण करने के लिए एकजुट हो जाएं।

—प्रेम भारद्वाज संपादक एवं सभा महामन्त्री

महर्षि दयानन्द मठ ढन मोहल्ला जालन्धर का 50 वां वार्षिक उत्सव

महर्षि दयानन्द मठ ढन मोहल्ला जालन्धर जालन्धर का 50 वां वार्षिक उत्सव 3 नवम्बर 2014 सोमवार से 9 नवम्बर 2014 रविवार तक बड़े उत्साह एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया जा रहा है। इस अवसर पर यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया जा रहा है। आर्य जगत के उच्च कोटि के विद्वान् महात्मा चैतन्य मुनि जी के प्रवचन तथा माता सत्याप्रिया जी यति के व श्री राजेश प्रेमी जी के भजन होंगे। आप सभी धर्मप्रेमी सज्जनों से प्रार्थना है कि आप सभी सपरिवार इष्ट मित्रों सहित इस कार्यक्रम में पधार कर पुण्य प्राप्त करें।

—कुन्दन लाल अग्रवाल प्रधान प्रबन्धकर्तृ सभा

वेद प्रचार सप्ताह मनाया गया

आर्य समाज महर्षि दयानन्द बाजार लुधियाना द्वारा वेद प्रचार सप्ताह एवं तेजपाल साथी का बलिदान दिवस 15 सितम्बर 2014 सोमवार से 21 सितम्बर 2014 रविवार तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर चतुर्वेद शतकम् यज्ञ का आयोजन किया गया। वेद प्रचार सप्ताह के अन्तर्गत यज्ञ का प्रारम्भ श्री बृजेन्द्र मोहन भण्डारी एवं श्रीमती उमा भण्डारी जी ने ज्योति प्रज्वलित कर किया गया। मुख्य यजमान श्री विनोद मरवाहा एवं श्रीमती अंजलि मरवाहा रहे। यज्ञ के ब्रह्मा कर्मवीर शास्त्री जी व मुख्य वक्ता स्वामी यज्ञमुनि जी रहे। सात दिन तक चले यज्ञ एवं कार्यक्रम की अध्यक्षता स्वामी शोभानन्द जी ने की भजनोपदेशक पं. घनश्याम प्रेमी द्वारा भजनों का कार्यक्रम हुआ। श्री जगदीश नारंग, श्रीमती बाला गम्भीर, श्री राजेन्द्र बत्रा व अनु गुप्ता के भी मधुर भजन हुए। यज्ञ के पश्चात् सातों दिन ऋषि लंगर का आयोजन किया गया। इस मौके पर शहीद तेजपाल साथी मैमोरियल चैरीटेबल ट्रस्ट द्वारा 150 स्कूली छात्राओं को स्कूल की वर्दी तथा एक सौ परिवारों को राशन वितरित किया गया। इस अवसर पर विधायक सिमरजीत सिंह बैस, जिला बार संघ के प्रधान विजय शर्मा, शिवसेना पंजाब के प्रधान राजीव टंडन, पवन शर्मा, रविन्द्र अरोड़ा, संजय गौतम, नीरज शर्मा, ओपी त्रिपाठी, विक्रम लूथरा, विशाल लूथरा, पार्श्वद गुरप्रीत सिंह खुराना, इन्द्र अग्रवाल, विजय मौर्य, संघ चेयरमैन, रमेश शर्मा, श्री जगदीश बजाज, रोशन लाल आर्य, देवपाल आर्य, आर्य समाज के प्रधान आत्म प्रकाश आर्य, महेन्द्र पाल विग मन्त्री, कुलदीप राय, सुरेन्द्र टंडन, संजीव चड्ढा, रमाकान्त महाजन, सुशील महाजन, अरूण सूद, वेदप्रिय चावला, श्रवण बत्रा आदि उपस्थित रहे।

परमात्मा की ओर पदार्पण

ले० मृदुला अग्रवाल 19-सी सस्त बोस रोड कोलकाता

परमात्मा की ओर पदार्पण के लिए सर्वप्रथम स्वयं को सुधारना अति आवश्यक है।

“बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।

जो दिल खोजा अपना, मुझसे बुरा न कोय॥”

हम स्वयं के दोषों को ढूँढकर उन्हें क्यों नहीं सुधारते। हम सब एक-दूसरे को उपदेश देते हैं, सलाह-मशवरा देते हैं, पर क्या कभी खुद के अन्तःकरण में झाँक कर देखते हैं कि हम संसार से क्या चाहते हैं या हम हृदय में क्या महसूस करते हैं। हम ईश्वर से क्या चाहते हैं, ईश्वर-तत्व को जानते हैं कि नहीं। परमात्मा का हमारी आत्मा से क्या सम्बन्ध है। आत्मा से परमात्मा की ओर पदार्पण करते समय स्वयं के कर्मों में निश्चयात्मक बुद्धि का प्रयोग करते हैं कि नहीं। प्रभु पर अपने अधिकार की भावना रखना बहुत जरूरी है। यह सोचना कि प्रभु मेरा है, मैं उसका हूँ, इस बीच में और कोई नहीं है। किसी में भी कोई बुराई नहीं है। ईश्वर कल्याणमात्र है, मंगलमय है, आनन्दमय एवं मधुमय है। उसमें जो गुण हैं वही तो सब पर बरसेंगे। हमें ईश्वर के गुण ग्रहण करने चाहिए।

“गुणाना जमदग्निना योनावृतस्य सीदतम्। पार्त सोममृतावृधा॥”

-सामवेद, मन्त्र-६६५

भावार्थ-“स्तुति करते हुए वेदज्ञान और ऋतम्भरा बुद्धि से प्रकाशमान विद्वान् और योगीजन ज्ञान रूप अग्नि के द्वारा वेदज्ञान के कारण परमेश्वर की शरण में स्थिति पाते हैं तथा आनन्दरस का पान भी करते हैं।” “जीव-प्रकृति परमात्मा” जीवात्मा से परमात्मा की ओर पदार्पण करते वक्त प्रकृति मध्य में होती है। प्रकृति हमें कई रूपों में आनन्द देती है। हमारे कल्याण के लिए बहुत सारे पदार्थ प्रदान करती है, जैसे-वायु, जल, अग्नि, आकाश, पृथिवी, सूर्य, वनस्पति, पशु इत्यादि। हम अपने-आप को अपने सबसे निकट सम्बन्धियों से दूर

कर लेते हैं, जो कि हमें सिर्फ प्रकृति से ही प्राप्त होते हैं। जैसे-तत्व-वायु, अग्नि, जल, पृथिवी एवं आकाश। व्यक्ति का भौतिक निर्माण इन्हीं 5 तत्वों से होता है, इसलिए हम सब या प्रत्येक व्यक्ति सबसे ज्यादा निकट इन्हीं के साथ होते हैं। मन एवं शरीर को प्रकृति के निकट रखकर उसका सदुपयोग करें, स्वस्थ रहें। जैसे-ऋग्वेद, मंडल-१, सूक्त-६०, मन्त्र-५, ६, ७ एवं यजुर्वेद, अध्याय-13, मन्त्र १७, १८, १९ में लिखा है-

“मधुवाताऽऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः। माध्वीनः सन्त्वोषधीः॥”

“मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थि रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता॥”

“मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां २५ अस्तु सूर्यः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः॥”

अर्थात्-जब बसन्त ऋतु आता है, तब पुष्प आदि की सुगन्धों से युक्त वायु, मधुर रस से युक्त जल (वर्षा) एवं औषधियाँ, सम्पूर्ण वातावरण में फैले रहते हैं। ऐसे में मनुष्य का घूमना-फिरना पथ्य होता है। इस समय रात्रि-प्रातःकाल, प्रकाश, पृथ्वी की राज, सब कुछ मधुर गुणों से युक्त होते हैं, जो मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए अति उत्तम हैं।

पशु-पक्षी भी मधुर-मधुर शब्दों को बोलते हैं और सब प्राणी आनन्दित होते हैं। पीपल आदि वनस्पति, सूर्य, किरणें सब कोमलता पूर्ण होती है। ऐसे समय में यज्ञों का अनुष्ठान भी सुखकर होता है।

“उद्यन्नादित्यः किमीन् हन्तु निम्रोचन हन्तु रश्मिभिः। ये अन्तः क्रिमयो गवि॥”

-अथर्ववेद, काण्ड-२, सूक्त-३२, मन्त्र-१

भावार्थ-प्रातःकाल और सायंकाल में सूर्य की कोमल किरणों और शीतल, मन्द, सुगन्धित वायु के सेवन से शारीरिक रोग के कीड़ों का नाश होकर मन हृष्ट और शरीर पुष्ट होता है। उदय और अस्त होते हुए सूर्य के समान

मनुष्य बालपन से बुढ़ापे तक अपने दोषों का नाश करके सदा प्रसन्न रहे।

हम इन निकट सम्बन्धियों को भूल जाते हैं। चाँद की चाँदनी (शीतलता), सूर्य का प्रकाश (तेज, ओज, ज्ञान रूपी उजाला) सबको भूलकर स्वयं को सम्पत्ति एवं सन्तति में लपेटे रहते हैं। बाहर की हरी-भरी भूमि, घास, वृक्षों की हरियाली, इन सबको छोड़कर मकान-घर-फ्लैट आदि को सजाने, संवारने में अपना अमूल्य समय गंवा देते हैं। जो समय भगवान को पाने में, उसकी झील में, उसका स्मरण करने में, ध्यान करके उसे अपने हृदय में विराजमान करने में लगाना चाहिए, उस समय को हम व्यर्थ की वार्तालाप करने में, एक-दूसरे की निन्दा करने में, स्वयं की प्रशंसा करने में इन सब में लगा देते हैं। यह नहीं सोचते कि यह दुर्लभ मानव-जीवन दोबारा मिलेगा कि नहीं। इसी जीवन में अपने अनमोल समय का सदुपयोग करें। संसार की कृत्रिमता को छोड़कर परमात्मा का वास्तविक आनन्द पाने की कोशिश करें। वेद रूपी राजपथों पर चलकर जीवनमुक्त होकर आनन्द पाने की कोशिश करें। वेद रूपी राजपथों पर चलकर जीवनमुक्त होकर आनन्द की स्वास ले, आनन्द भोगें। मनुष्य अविवेक के कारण मूढ़ होकर अपनी और संसार की हानि कर डालता है। वह पुरुष अपने प्रमाद पर पश्चाताप कर और पाप कर्म छोड़कर ईश्वर आज्ञा का पालन करके आनन्द भोगे।

“अच्छा कोशं मधुश्चुतमसुगं वारे अव्यये। अवावशान्त धीतयः॥”

-सामवेद, मन्त्र ६५७

भावार्थ-“प्राप्त करने योग्य नित्य परमेश्वर की शरण में उपस्थित होकर ज्ञानीजन अमृत की वर्षा करने वाले आनन्दमय कोष को भली-भाँति खोलते हैं और ब्रह्मानन्द की कामना भी करते हैं।” चमक-दमक वाले भौतिक सुख के लिए अपना ईश्वर प्राप्ति रूप

ब्रह्मानन्द को दाँव पर लगा देना कहां की शाबाशी है। जब तक त्याग की भावना प्रबल न हो, परमात्मा से मिलने की इच्छा स्वयं की आत्मा को झकझोर न दे, संसार की सम्पत्ति एवं सन्तति से वैराग्य उत्पन्न न हो, तब तक जीवन का आन्तरिक आनन्द मधुमय नहीं हो सकता। स्वयं का सुधार नहीं हो सकता। मनुष्य जीवन के वास्तविक आनन्द की उपलब्धि नहीं हो सकती है। हम क्यों भूल जाते हैं कि परमात्मा के पास सिर्फ आनन्द ही आनन्द है। हम अपने आप को परमात्मा का प्रतिनिधि समझकर प्रकृति के ५ तत्व एवं संसार की प्रत्येक वस्तु का सदुपयोग करें तो सत्य-साधना होगी। श्रेष्ठता का अहंकार, धन-संचय करना, सांसारिक वस्तुओं पर अपना अधिकार मानना जो आज है कल नहीं है तो सब परमात्मा की ही जो सर्वत्र व्याप्त है।

स्वामी दयानन्द जी के अनुसार सत्य पर चलना, असत्य का त्याग करना, स्वयं को सुधारने का सबसे उत्तम मार्ग है। कल्याणमय जीवन-पथ, सत्य-पथ ही है।

“ओ३म् उद्यन्तमसस्पति स्वः पश्यन्तऽउत्तरम्। देवमन्देवत्रा सूर्यमग्न्य ज्योतिरुत्तमम्॥”

-यजुर्वेद, अ०-३५, मन्त्र-१४

सूर्य के समान तेजपुंज प्रकाशमान, ज्योति स्वरूप परमात्मा के दर्शन की अभिलाषा, परमात्मा के निकट रहने की इच्छा एवं अज्ञानमय सांसारिक अन्धकार से स्वयं को ऊपर उठाकर जीवन की उन्नति एवं कल्याणमय मार्ग पर चलना ही श्रेयस्कर मार्ग है।

सच्चिदानन्द, सुखस्वरूप, संसार के उत्तम सुखों को देने वाला, धार्मिक विद्वानों के परमहितकारक, सृष्टि से पूर्व, पश्चात् और मध्य में सत्य स्वरूप से विद्यमान रहने वाला, सकल जगत् का उत्पादक, प्रकाशकों का प्रकाशक परमात्मा हमें अच्छी बुद्धि की प्रेरणा दें एवं हमें अपनी ओर पदार्पण की शक्ति प्रदान करें।

योग के साधकों को आश्वासन

ले० प्रो० उमाकान्त उपाध्याय पी०३०, कालिन्दी हाऊसिंग स्टेट कोलकाता

महर्षि पतञ्जलि ने अपने योगदर्शन में योग के आठ अंग बताए हैं-1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम 5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान और 8. समाधि। इनमें प्रथम के चार यम, नियम, आसन और प्राणायाम बहिरंग योग कहलाते हैं। अन्त के चार प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि अंतरंग योग हैं।

यम पांच प्रकार के होते हैं-

“तत्र हिंसा सत्याग्रह अहिंसा अर्थात् यमः ॥”

यह योगदर्शन का वचन है। अर्थात् (अहिंसा) वैरत्याग, (सत्य) सत्य ही मानना, सत्य ही बोलना और सत्य ही करना, (अस्तेय) अर्थात् मन, कर्म, वचन से चोरी त्याग, (ब्रह्मचर्य) अर्थात् उपस्थोन्द्रिय का संयम, (ऊपरिग्रह) अत्यन्त लोलुपता, स्वत्वभिमानरहित होना, इन पांचों यमों का सेवन सदा करें।

नियम-

“शौच सन्तोष तपः स्वाध्याय-श्वरप्रणिधानानि नियमाः ॥”

यह योगशास्त्र का वचन है।

(शौच) अर्थात् स्नानादि से पवित्रता, (सन्तोष) सम्यक् प्रसन्न होकर निरुद्यम रहना सन्तोष नहीं, किन्तु पुरुषार्थ जितना हो सके उतना करना, हानि-लाभ में हर्ष व शोक न करना, (तपः) अर्थात् कष्टसेवन से भी धर्म युक्त कर्मों का अनुष्ठान, (स्वाध्याय) पढ़ना-पढ़ाना, (श्वरप्रणिधान) ईश्वर की भक्तिविशेष से आत्मा को अर्पित रखना, ये पांच नियम कहते हैं।

यमों के बिना केवल इन नियमों का सेवन न करें, किन्तु इन दोनों का सेवन किया करें। जो यमों का सेवन छोड़ कर, केवल नियमों का सेवन करता है। वह उन्नति को प्राप्त नहीं होता, किन्तु अधोगति अर्थात् संसार में गिरा रहता है।

इस तथ्य के समर्थन में निम्नलिखित मनुस्मृति का श्लोक देखने योग्य है-

“यमान् सेवेत सततं न नियमान् केवलान् बुधः।

यमान्यतर्त्यकुर्वाणो नियमान् केवलान् भजन् ॥” -मनु० ४।१२४

यम और नियम जीवन जीने के महत्त्वपूर्ण अंग हैं, इनके अभाव में योग की साधना असम्भव है। यहां एक और सच्चाई ध्यान में रखनी चाहिए कि सदाचारी गृहस्थ भी योग

की साधना आराम से कर सकता है।

योग का तीसरा अंग है आसन। योगदर्शन का सूत्र है-

“स्थिरसुखमासनम्” योगसाधना के लिए लम्बे समय तक स्थिर होकर सुखपूर्वक बैठना। योगसाधना के लिए मुख्य रूप से सिद्धासन, पद्मासन व सुखासन बताए जाते हैं। आसन के सम्बन्ध में मुख्य बात यह है कि दोनों पुष्टे समान रूप से आसन पर स्थित हो, कमर में जहां त्रिकस्थि है वहां से मेरुदण्ड गर्दन तक सीधा रहे। इससे इडा, पिङ्गला और सुषुम्णा तीनों नाडियों खुली रहें और प्राणों का आवागमन होता रहे। साधना के लिए इतना ही आसन पर्याप्त है।

योग का चतुर्थ अंग है प्राणायाम। प्राणायाम में प्राणों को श्वास से दोनों नथुनों से बाहर निकालकर रोकना वायु और मूल को संकुचित करना लाभकारी है। अधिक देर बाह्यवृत्ति अर्थात् बाहर रोकना उत्तम है। स्वाभाविक रूप से श्वास अन्दर लेकर थोड़ा रोककर फिर बाहर रोकना मूल पायु का संकोच करना लाभकारी है। इससे इडा, पिङ्गला और सुषुम्णा तीनों खुलकर सक्रिय हो जाती है और साधना में सहयोग मिलता है।

यम, नियम, आसन और प्राणायाम ये चारों बहिरंग हैं। प्रत्याहार, धारणा, ध्यान और समाधि ये चारों अन्तरंग योग हैं। प्रत्याहार का अर्थ है कि ज्ञान इन्द्रियों को बाह्य विषयों से अन्तर्मुखी करके परमेश्वर में ध्यान लगाना। भगवान ने आँख, कान, नाक आदि ज्ञान इन्द्रियों को बहिर्मुखी बनाया है, इसलिए वे बाहर के विषयों को आसानी से ग्रहण कर लेती हैं। उन्हें अन्तर्मुखी करके परमेश्वर के गुण, चिन्तन में लगाना प्रत्याहार है, इसीलिए योगसाधना के समय आँखें अधखुली बन्द कर लेते हैं। कई लोग कानों में रुई का फूहा भी लगा लेते हैं। इससे बाहर के दृश्य, शब्द आदि नहीं सुनाई पड़ते। अन्तरंग योग का द्वितीय साधन “धारणा” है। धारणा की परिभाषा है-“देशबन्धचित्तस्य धारणा।” चित्त को किसी एक स्थान पर बांध देना। कई लोग दीपक की लौ पर भी धारणा करते हैं। किन्तु परमेश्वर की धारणा के लिए हृदय पुण्डरीक-दोनों छातियों के बीच में खाली जगह पर, नासिकाग्र दोनों भौहों के बीच में

आज्ञा चक्र पर (जहां पिट्यूटरी ग्लैण्ड्स) और सिर में सहस्रार (जहां खोपड़ी में पिलपिला है) उत्तम स्थान है।

इसके पश्चात् ध्यान का क्रम आता है। योगदर्शन में कहा है- “तत्रैकिकतानता ध्यानम्।” धारणा को एकरस बनाए रखना, कोई विच्छेद न होने देना ध्यान है। ध्यान में परमेश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव का निरन्तर करते रहना उचित है। इसका पूर्ण अभ्यास हो जाने पर समाधि लग जाती है। समाधि में सब कुछ भूल जाता है। ध्यान करने वाला अपने को भूल जाता है, मैं ध्यान कर रहा हूँ यह भी भूल जाता है। केवल परमेश्वर का चिन्तन मात्र ही ध्यान में रह जाता है। समाधि भी सम्प्रज्ञात और असम्प्रज्ञात दो तरह की होती है। इस समय समाधि के इन दोनों भेदों को अब छोड़ रहे हैं, यह साधना का ऊँचा विषय है। योग साधना में समाधि तक पहुँचना अनेक जन्मों में सिद्ध हो पाता है।

अर्जुन ने श्रीकृष्ण से गीता में पूछा है यदि कोई मनुष्य योग साधना करता-करता भटक जाए तो उसकी क्या गति होती है-

“अयतिः श्रद्धयोपेतो योगाच्चलितमानसः।

अप्राप्य योगसंसिद्धिं का गतिं कृष्ण गच्छति ॥” -गीता० ६।३७

अर्जुन बोला-हे श्रीकृष्ण! जो योग में श्रद्धा रखने वाला है। किन्तु संयमी नहीं है, इस कारण जिसका मन अन्तकाल में योग से विचलित हो गया है, ऐसा साधक योग की सिद्धि को अर्थात् भगवत्साक्षात्कार को न प्राप्त होकर किस गति को प्राप्त होता है?

श्रीकृष्ण जी उत्तर देते हैं कि योग का मार्ग कल्याण का मार्ग है। योग के मार्ग में चलने वाले की कभी दुर्गति नहीं होती। गीता में श्रीकृष्ण के आश्वासन ध्यान देने योग्य हैं-

“पार्थ नैवेह नामुत्र विनाशस्तस्य विद्यते।

न हि कल्याणकृतकश्चिद् दुर्गतिं तात गच्छति ॥”

-गीता० ६।३०

श्री भगवान बोले-हे पार्थ! उस पुरुष का न तो इस लोक में नाश होता है और न परलोक में ही। क्योंकि हे प्यारे! आत्मोद्धार के लिए अर्थात् भगवत्प्राप्ति के लिए कर्म करने वाला कोई भी मनुष्य दुर्गति

को प्राप्त नहीं होता।

“प्राप्य पुण्यकृतां लोकानुषित्वा शाश्वतीः समाः।

शुचीनां श्रीमतां गेहे योग भ्रष्टोऽभिजायते ॥” -गीता० ६।४१

योगभ्रष्ट पुरुष पुण्यवानों के लोकों को अर्थात् स्वर्गादि उत्तम लोकों को प्राप्त होकर, उनमें बहुत वर्षों तक निवास करके फिर शुद्ध आचरण वाले श्रीमान पुरुषों के घर में जन्म लेता है।

अथवा वैराग्यवान पुरुष उन लोकों में न जाकर ज्ञानवान् योगियों के ही कुल में जन्म लेता है। परन्तु इस प्रकार का जो यह जन्म है, सो संसार में निःसंदेह अत्यन्त दुर्लभ है।

“तत्र तं बुद्धिसंयोगं लभते पौर्वदेहिकम्।

यतते च ततो भूयः संसिद्धौ कुरुनन्दन ॥” -गीता० ६।४३

वहां उस पहले शरीर में संग्रह किए हुए बुद्धि संयोग को अर्थात् समबुद्धि रूप योग के संस्कारों को अनायास ही प्राप्त हो जाता है और हे कुरुनन्दन! उनके प्रभाव से वह फिर परमात्मा की प्रतिरूप सिद्धि के लिए पहले से भी बढ़कर प्रयत्न करता है।

“पूर्वाभ्यासेन तेनैव ह्वियते ह्यवशोऽपि सः।

जिज्ञासुरपि योगस्य शब्दब्रह्मा-तिवर्तते ॥” -गीता० ६।४४

वह श्रीमानों के घर में जन्म लेने वाला योगभ्रष्ट पराधीन हुआ भी उस पहले के अभ्यास से ही निःसंदेह भगवान् की ओर आकर्षित किया जाता है, तथा समबुद्धिरूप योग का जिज्ञासु भी वेद में कहे हुए सकाम कर्मों के फल को उल्लंघन कर जाता है।

“प्रयत्नाद्यतमानस्तु योगी संशुद्धकिल्बिषः।

अनेक जन्मसंसिद्धस्ततो याति परां गतिम् ॥” -गीता० ६।४५

परन्तु प्रयत्नपूर्वक अभ्यास करने वाला योगी तो पिछले अनेक जन्मों के संस्कार बल से इसी जन्म में संसिद्ध होकर सम्पूर्ण पापों से रहित हो फिर तत्काल ही परमगति को प्राप्त हो जाता है।

इस सबका यही आशय है कि मनुष्य को जहां तक सुयोग सुविधा मिले, शरीर साथ दे, परमेश्वर के साक्षात्कार के लिए योग साधना अवश्य करते रहना चाहिए।

महर्षि दयानन्द सरस्वती-पुनर्जागरण के युग पुरुष

ले० डा. ए. कुमार कौल डायरेक्टर गांधी आर्य सीनियर सैकेंडरी स्कूल

भारत में बहुत से प्रसिद्ध व्यक्तियों, जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्रों में अद्वितीय कार्य किया है, ने जन्म लिया है। भारत के इन महान् पुरुषों ने बहुत सी बुराईयों के विरुद्ध अपनी आवाज उठाई और अपने साहस, दृढ़ निश्चय और भागीरथ प्रयत्न के बलबूते पर सफलता की चोटी को हुआ। उनका जीवन समस्त भारतीयों के लिए प्रेरणा का स्रोत है, तथा करोड़ों भारतीयों व विश्व के करोड़ों लोगों को प्रेरणा देता रहेगा।

पुनर्जागरण के युग पुरुष महर्षि दयानन्द सरस्वती भारत के इतिहास में सामाजिक, धार्मिक सुधारों के क्षेत्र में प्रमुख सुधारकों के क्षेत्र में से एक हैं। वे आर्य समाज के संस्थापक थे। उन्होंने ऐसे समय में जब भारतीय समाज में जातिवाद व्यापक रूप से फैला हुआ था, वेदों की अति सरल व्याख्या की तथा उन्हें जन-जन तक पहुंचाया। महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन तथा मिशन 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राष्ट्रीय हिन्दुत्व सुधार आन्दोलन का शानदार अध्याय है। 1824 ई० में गुजरात के टंकारा गांव में जन्में महर्षि दयानन्द सरस्वती का मूल नाम मूलशंकर तिवारी था। उनके जीवन में ऐसी बहुत सी घटनाएं घटी, जिन्होंने हिंदू धर्म के पारम्परिक विश्वासों पर प्रश्न चिह्न लगा दिया और वे बचपन के प्रारम्भिक काल से ही भगवान की खोज में जुट गए। वे ईश्वर की खोज में साधु के रूप में जंगलों, हिमालय की कंदराओं तथा उत्तर भारत के पवित्र तीर्थ स्थलों पर लगभग दो दशक तक भटकते रहे। जीवन के इस चरण, जब वे आध्यात्मिक मुक्ति की तलाश कर रहे थे, उन्हें गुरु व विश्वसनीय परामर्शदाता के रूप में स्वामी विरजानन्द सरस्वती मिले। स्वामी विरजानन्द ने उन्हें गुरु दक्षिणा के रूप में वेदों का ज्ञान फैलाने को कहा। सन् 1867 ई० से 1872 ई० के बीच का समय महर्षि दयानन्द द्वारा हिन्दू धर्म को सुधारने की दिशा में किए गए प्रयासों के लिए उल्लेखनीय है। इस काल के दौरान उन्होंने अपनी नई विचारधारा का विकास किया।

उन्होंने विशुद्धिकृत वैदिक धर्म की स्थापना के लिए अपने विचारों

का प्रचार करना शुरू कर दिया। उनका उद्देश्य था कि वेदों की आध्यात्मिक सत्ता का प्रचार किया जाए। जिसमें वे पारंगत थे। कोलकाता तथा अन्य जगहों पर उन्होंने रूढ़िवादी हिन्दू धर्म के तथाकथित पीढ़ियों व ईसाई मिशनरियों से वाद-विवाद किया।

समाज सेवा के उद्देश्य से महर्षि दयानन्द ने सन् 1875 में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना की। आर्य समाज ने समवेत स्वर में मूर्ति-पूजा, पशु-बलि, पितृ-पूजा, तीर्थ-यात्रा, पण्डिताई, मन्दिरों में चढ़ाए जाने वाला चढ़ावा, जातिवाद अस्पृश्यता, बाल विवाह तथा महिलाओं के प्रति भेदभाव का जमकर विरोध किया। उन्होंने कर्म सिद्धान्त का समर्थन किया। उनका हठ विश्वास था, कि भारतवर्ष के पतन का मुख्य कारण महिलाओं को शिक्षा से वंचित रखना और पर्दा-प्रथा है। स्वामी दयानन्द सरस्वती अध्यात्म के क्षेत्र के पहले धर्म गुरु थे, जिन्होंने विज्ञान और प्रौद्योगिकी की उन्नति का स्वागत किया।

जब महर्षि दयानन्द ने अपने विचारों के प्रचार-प्रसार के लिए आर्य समाज की नींव रखी तो उनके प्रचार का मुख्य नारा था-“वापस वेदों की ओर जाओ।” उनके सार्वजनिक संभाषणों को हाथों-हाथ ग्रहण किया और उन्हें सन् 1875 में सत्यार्थ प्रकाश के रूप में संकलित कर दिया गया, जो उनकी प्रसिद्ध कृति है। नई दिल्ली में भारत के वायसराय लॉर्ड लिट्टन ने एक जनवरी 1877 ई० को दिल्ली दरबार, सभी धर्मों के प्रतिनिधियों का एक सम्मेलन बुलाया था, जिसमें महर्षि दयानन्द ने भी भाग लिया था जिसमें महर्षि दयानन्द सभी जातियों के लिए वेदों के अध्ययन के लिए एक पाठशाला खोली। यह प्राचीन भारतीय शिक्षा प्रणाली गुरुकुल परम्परा को पुनर्जीवित करने की दिशा में एक ठोस कदम था।

महर्षि दयानन्द ने कुल मिलाकर 60 से अधिक पुस्तकें लिखीं। अजमेर में परोपकारिणी सभा की स्थापना स्वयं महर्षि जी ने की थी। इस सभा का उद्देश्य उनकी कृतियों तथा वैदिक सिद्धान्त का प्रकाशन व प्रचार करना था।

महर्षि दयानन्द की क्रान्तिकारी एवं मौलिक विचारधारा के कारण उनके अनेक शत्रु बन गए थे। वे अपनी निर्भयता व स्पष्टवादिता के लिए विश्व विख्यात थे। वे बिना किसी डर या पक्षपात के सत्य बोलते थे, और इस कारण बहुत से धार्मिक नेता उनसे नाराज रहने लगे। इस कारण सुकरात की तरह महर्षि दयानन्द सरस्वती को भी लोगों ने विषपान करा दिया क्योंकि वे उन कड़वी सच्चाईयों जो वे निडर और निष्पक्ष होकर बोलते थे, को पचा नहीं पाए। तीस अक्टूबर 1883 की रात को उनका स्वर्गवास हो गया। उन्होंने ओ३म् का उच्चारण करते हुए अन्तिम सांस ली।

उनका मानना था, कि सफल सांसारिक जीवन तथा अच्छे उद्देश्य

के लिए कर्म करना महत्वपूर्ण है, और उन्होंने प्रचार किया कि समाज सेवा के माध्यम से ही मोक्ष प्राप्त किया जा सकता है। उनकी राय थी, कि भारत को ब्रिटिश शासकों के दमन से मुक्त कराने और देश को स्वतन्त्र कराने के लिए सशस्त्र, संघर्ष जरूरी है। वे “आधुनिक भारत के निर्माताओं” में से एक हैं। वे पहले व्यक्ति थे जिन्होंने स्वराज्य “भारत भारतवासियों” के लिए का नारा बुलन्द किया।

महर्षि दयानन्द के बारे में चर्चा करते हुए, श्री अरविन्दो ने कहा था, “वैदिक व्याख्या के मामले में अन्तिम व सम्पूर्ण व्याख्या कुछ भी हो, मुझे विश्वास है, कि दयानन्द को तथ्यों के प्रथम अन्वेषक के रूप में सम्मान दिया जाएगा।”

ऋषि निर्वाण एवं दीपावली पर्व मनाया गया

आर्य समाज शहीद भगत सिंह नगर जालन्धर में ऋषि निर्वाण एवं दीपावली का पर्व बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य यजमान श्री स्वर्ण शर्मा व श्रीमती विजयलक्ष्मी शर्मा ने बड़ी श्रद्धा से यज्ञ में आहुतियां प्रदान की। यज्ञ पं. शिवा जी ने करवाया और यजमानों से आहुतियां डलवाई तथा दीपावली के उपलक्ष्य में राम के चरित्र को याद करते हुए कहा कि उन्होंने अपने सम्पूर्ण जीवन में धर्म का पालन किया और कभी भी अपने कर्तव्य से विचलित नहीं हुए और दुष्टों का संहार किया। ऋषि दयानन्द को याद करते हुए उन्होंने उन्हें युग पुरुष और एक समाज सुधारक बताया। आर्य समाज की भजन गायिका श्रीमती सोनू भारती जी ने धन्य है तुझको ऐ ऋषि तूने हमें जगा दिया भजन सुनाकर ऋषि को श्रद्धाजलि भेंट की। आर्य समाज के मन्त्री श्री रणजीत आर्य जी ने महर्षि दयानन्द के उपकारों को याद करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द ने मानव जाति के लिए इतना कार्य किया है कि हम कभी भी उनके ऋण से उन्मुक्त नहीं हो सकते। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी एक समाज सुधारक थे। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने हमें अपनी संस्कृति को अपनाने तथा वेदों की ओर लौटने का संदेश दिया। श्री अश्विनी कुमार डोगरा जी ने महर्षि दयानन्द जी को श्रद्धाजलि भेंट करते हुए कहा कि महर्षि दयानन्द महाज्ञानी थे, उन्होंने गुरु विरजानन्द जी से ज्ञान प्राप्त करके संसार से बुराईयों और कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया। इस अवसर पर चौ. हरिचन्द, अश्विनी डोगरा, रमेश मुदरेजा, हर्ष लखनपाल, सुभाष आर्य, इन्दु आर्य, राकेश बावा, सरीता बावा, राजेश वर्मा, अनिल कुमार, ओम प्रकाश मैहता, रमा शर्मा, संगीता मल्हौत्रा, लवलीन कुमार, कमलेश कुमार, सुदर्शन आर्य, शिखा आर्य, अनु आर्या, दिव्या आर्या, रजिन्द्र शर्मा, राजीव शर्मा, पवन शुक्ला, उमा शुक्ला, विनोद तिवारी, संगीता तिवारी, तिलक राज, अनिल मिश्रा, अर्चना मिश्रा, रचना मिश्रा, मोहन लाल, मनु आर्या, स्नेह लता कालिया, मनप्रीत शर्मा, प्रेमनाथ मित्तु, रेणु शर्मा, सुनयना शर्मा, रोहित मिश्रा, राकेश मिश्रा, राजीव कुन्दा, सुरेन्द्र कुमार आदि उपस्थित थे।

-रणजीत आर्य मन्त्री आर्य समाज

शोक समाचार

आर्य समाज मानसा के एक समर्पित आर्य समाजी परिवार के सदस्य श्रीमती कमलेश रानी धर्मपत्नी श्री रमेश बांसल पूर्व कोषाध्यक्ष जी का हृदयगति रूक जाने से दिनांक 22 सितम्बर 2014 को अकस्मात् स्वर्गवास हो गया। उनकी आयु 53 वर्ष थी। आप अपने पीछे एक पुत्र और एक पुत्री छोड़ कर गई। आपने निष्काम भाव से आर्य समाज की सेवा की। स्व. श्रीमती कमलेश रानी की आत्मिक शांति के लिए दिनांक 1 अक्टूबर 2014 को अंतिम शोक सभा का आयोजन किया गया। आर्य समाज तथा आर्य सी. सै. स्कूल के पदाधिकारियों एवं सदस्यों द्वारा आपके निधन पर शोक प्रकट किया गया एवं परमपिता परमात्मा से प्रार्थना की गई कि वह दिवंगत आत्मा को सद्गति व शान्ति प्रदान करें और परिवार को यह दुःख सहन करने की शक्ति दे। -**कृष्ण कुमार बांसल मन्त्री आर्य समाज**

वेद सप्ताह मनाया

आर्य समाज 115-पिछोली उदयपुर में 23 से 28 सितम्बर 14 तक आयोजित वेद प्रचार सप्ताह के तहत आचार्य सोमवेद जी ऋषि उद्यान अजमेर ने वेद मंत्रों की व्याख्या, आख्यान एवं आम जीवन की छोटी-छोटी घटनाओं को प्रस्तुत करते हुए वेद प्रचार के उद्देश्य को सार्थक किया। मुख्य लक्ष्य-स्वयं के उत्थान, अंधविश्वास एवं अविद्या का नाश कर विचलित हो रहे हैं। आर्थिक विपन्न भाई-बहनों को सम्बल प्रदान कर आर्य समाज की मुख्य धारा से जोड़ने का आहवान किया। इस हेतु प्रत्येक आर्य समाजी को स्वाध्याय, सद्विचार, परोपकार एवं विश्व पटल पर होने वाले परिवर्तनों पर गौर कर आर्य संस्कृति को अक्षुण्ण रखने के संकल्प स्वीकार करने की प्रेरणा दी। आपने महर्षि दयानन्द सरस्वती के उपकारों को स्पष्ट करते हुए बताया कि यदि मेरा ऋषि इस धरती पर नहीं आया होता तो न जाने इस आर्यावर्त की क्या दशा होती। हम इस बात का प्रयास करें कि हमारी पूरी क्षमता व समय का उपयोग ऋषि ऋण मुक्त हो तथा योगाभ्यास द्वारा मोक्ष प्राप्त करने हेतु करें। प्रतिदिन सत्यप्रिय आर्य द्वारा यज्ञ एवं इन्द्रदेव पीयूष, सुरेशचन्द्र चौहान एवं पुष्पा गुप्ता द्वारा भजन प्रस्तुत किए गए। प्रातः कालीन सत्र में विद्यालयों में प्रवचन करा 2225 छात्रों/शिक्षकों को लाभान्वित किया।

-**प्रधान आर्य समाज, उदयपुर**

ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया

आर्य समाज मन्दिर कमालपुर होशियारपुर में दिनांक 23-10-2014 वीरवार को महर्षि दयानन्द सरस्वती के जीवन के अन्तिम क्षणों को याद करते हुए ऋषि निर्वाण दिवस बड़ी श्रद्धा के साथ मनाया गया जिसमें श्री कुलदीप आहलूवालिया जी ने सपत्नीक यजमान पद को सुशोभित किया। नगर से पधारे आर्य जनों ने यज्ञकुण्ड में आहुतियां डाली। तत्पश्चात् दयानन्द हाल में श्रद्धांजलि समारोह चला। श्रीमती विमला भाटिया और श्रीमती नीना कपूर ने मिलकर ऋषि के जीवन पर एक सुन्दर भजन प्रस्तुत किया। मंच से श्री सत्यपाल जी पथिक द्वारा रचित फिर आ गई दीवाली नामक कविता पढ़ी गई। मंच का संचालन करते प्रो. यशपाल वालिया ने मर्यादा पुरुषोत्तम राम और देव दयानन्द के प्रति अपनी श्रद्धा जताते हुए कहा कि श्रीराम न केवल भारत में अपितु विश्व में जाने जाते रहे हैं। स्वामी दयानन्द ने अपने अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में सत्य की मर्यादा को स्थापित किया। ऋषि दयानन्द ने हमें जीना सिखाया और जब हम उनके अन्तिम क्षणों को याद करते हैं तो पता चलता है कि वे हमें मरना भी सिखा गए। आज के दिन समाजों को औपचारिकता से ऊपर उठकर अपने उत्सवों में सकारात्मक कार्यक्रम रचने चाहिए ताकि ऋषि के भक्त अधिक से अधिक संख्या में जुड़ें। अन्त में सभी आर्य जनों ने ऋषि प्रसाद ग्रहण किया।

प्रो. एन. के. शर्मा प्रधान आर्य समाज

दीपावली एवं ऋषि निर्वाण दिवस मनाया गया

आर्य समाज जवाहर नगर लुधियाना में दीपावली पर्व एवं ऋषि निर्वाण दिवस 23 अक्टूबर 2014 को प्रातः 8:00 से 10:00 बजे तक बड़ी श्रद्धा से मनाया गया जिसमें आर्य समाज के पुरोहित पं. बाल कृष्ण शास्त्री जी ने सभी से शारदीय नवशस्येष्टि यज्ञ की आहुतियां डलवाई तथा इस यज्ञ का महत्त्व बताया। श्री रमेश कुमार एवं श्री विजय सरीन जी ने मनोहर भजन सुनाए। श्रद्धेय आचार्य वेद प्रकाश जी ने महर्षि दयानन्द जी के जीवन पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने अपने गुरु स्वामी विरजानन्द जी से शिक्षा प्राप्त करने के बाद संसार से अज्ञान और अन्धकार को मिटाने के लिए सत्य वेद ज्ञान का प्रचार व प्रसार किया तथा देश की स्वतन्त्रता और समाज सुधार के लिए महत्वपूर्ण कार्य किया। आज के दिन उस महामानव को हमारी यही सच्ची श्रद्धांजलि होगी कि हम उनके द्वारा बताए मार्ग पर चल कर इस कार्य को आगे बढ़ाएं। -**विजय सरीन प्रधान आर्य समाज**

आर्य समाज जीरा में दशहरा पर्व मनाया गया

दिनांक 3-10-2014 शुक्रवार को आर्य समाज जीरा में दशहरा का पावन पर्व बड़ी ही धूमधाम और हर्षोल्लास के साथ मनाया गया, जिसमें इस मंदिर के पुरोहित श्री पंडित किशोर कुणाल जी ने बड़े ही सुन्दर ढंग से बृहदयज्ञ करवाया और अन्त में दशहरा पर्व के बारे में विस्तार पूर्वक रोशनी डाली और कहा कि हमें रावण को हर साल जलाने की अपेक्षाकृत अपने मन के षट् विकारों जैसे कि काम, क्रोध, लोभ, मोह, ईर्ष्या, द्वेषादि को जलाकर भस्मीभूत कर देना चाहिए। न कि मरे हुए रावण को बार-बार पुतला बनाकर जलाना चाहिए। यह हवन यज्ञ इस आर्य समाज मन्दिर के प्रधान श्री सुभाष चन्द्र आर्य की अध्यक्षता में सम्पन्न हुआ जो चालीस साल से भी अधिक इस समाज को पल्लवित और पुष्पित करते आ रहे हैं। इस मौके पर सभी सदस्य उपस्थित थे। -**प्रधान-सुभाष आर्य**

दीपावली पर्व पर यज्ञ का आयोजन

आर्य समाज धूरी में दिनांक 23-10-2014 दिन वीरवार को ऋषि निर्वाण दिवस व दीपावली का पावन पर्व प्रति वर्ष की भांति इस वर्ष भी श्रीमान प्रहल्लाद कुमार आर्य प्रधान आर्य समाज धूरी की अगुवाई में और महाशय प्रतिज्ञा पाल जी की अध्यक्षता में मनाया गया। सर्वप्रथम पंडित शैलेश कुमार शास्त्री ने विशेष यज्ञ करवाया जिसमें यज्ञ के मुख्य यजमान प्रधान प्रहल्लाद आर्य जी रमेश आर्य सोम प्रकाश आर्य स्त्री आर्य समाज के मंत्राणी कृष्णा आर्य धर्म शीला आर्य एवं सभी अधिकारीगण, इस यज्ञ में उपस्थित महानुभावों ने आहुतियां डाल कर विश्व शान्ति के लिए प्रार्थना की। सबसे पहले शास्त्री जी ने दीपावली के पर्व पर प्रकाश डाला। वेद के मंत्रों के द्वारा बताया कि तमसो मा ज्योतिर्गमय अर्थात् अन्धकार से प्रकाश की ओर चलने के लिए प्रेरणा दी। आर्य कालेज, आर्य स्कूल एवं यश चौधरी स्कूल के बच्चों के द्वारा संस्कृति कार्यक्रम एवं स्वामी दयानन्द सरस्वती जी के प्रति भजन प्रस्तुत किए गए। मंच का संचालन करते हुए मंत्री रामपाल आर्य जी ने स्वामी दयानन्द जी को श्रद्धांजलि दी। विशेष आकर्षण विद्यार्थियों से धार्मिक राष्ट्रीय संस्कारों से सामान्य ज्ञान को बढ़ाने हेतु प्रश्नोत्तरी की गई। विजेताओं को महाशय प्रतिज्ञापाल जी प्रहल्लाद, डा. एम. के. सरीन, वासुदेव आर्य, रमेश आर्य, सतीश आर्य, पवन कुमार गर्ग, आर. पी. शर्मा, अशोक जिन्दल, रघुनाथ शर्मा एवं वीरेन्द्र कुमार कार्यकारिणी प्रधान आर्य समाज धूरी के हाथों के द्वारा इनाम दिए गए।

आर्य समाज के प्रधान प्रह्लाद आर्य जी ने आए हुए सभी लोगों व तीनों संस्थाओं के अध्यापकों, छात्र-छात्राओं को धन्यवाद किया और बताया कि ऐसे महान पुरुष से हमें श्रेष्ठ बनने के लिए प्रेरणा लेनी चाहिए। इस अवसर पर आर्य स्कूल के मैनेजर वीरेन्द्र गर्ग, यश चौधरी स्कूल के मैनेजर सतीश आर्य जी व आर्य कालेज के मैनेजर पवन कुमार गर्ग, प्रधान अशोक जिन्दल जी, प्रिंसीपल बी. एल कालिया जी मोनिका वाट, धर्मदेव जी, कुसुम जिन्दल एवं धूरी के सभी आर्य समाजों के सदस्य एवं अधिकारीगण इस कार्यक्रम में बढ़-चढ़ कर भाग लिया और दीपावली की शुभकामनाएं दीं।

-**पंडित शैलेश कुमार शास्त्री पुरोहित आर्य समाज धूरी**

वेदवाणी**प्रभु हमारे भीतर वैदिक सत्य को जाग्रत कर दें**

अग्ने यं यज्ञमध्वरं विश्वतः परिभूरसि॥
स इह देवेषु गच्छति॥

-अद० १/११/४

विनय- हम कई शुभ अभिलाषाओं से कुछ यज्ञों को प्रारम्भ करते हैं और चाहते हैं कि यज्ञ सफल हो जाएं, परन्तु हे देवों के देव अग्निदेव! कोई भी यज्ञ तब तक सफल नहीं हो सकता जब तक उस यज्ञ में तुम पूरी तरह न व्याप रहे हो, चूंकि जगत् में तुम्हारे अटल नियमों व तुम्हारी दिव्य शक्तियों के, अर्थात् देवों के द्वारा ही सब कुछ सम्पन्न होता है। तुम्हारे बिना हमारा कोई यज्ञ कैसे सफल हो सकता है? और जिस यज्ञ में तुम व्याप्त हो वह यज्ञ अध्वर (ध्वर अर्थात् कुटिलता और हिंसा से रहित) तो अवश्य होना चाहिए, पर जब हम यज्ञ प्रारम्भ करते हैं, कोई शुभ कर्म करते हैं, किसी संघ संगठन में लगते हैं, परोपकार का कार्य करने लगते हैं तो मोहवश तुम्हें भूल जाते हैं। उसकी जल्दी सफलता के लिए हिंसा और कुटिलता से भी काम लेने को उतार हो जाते हैं। तभी तुम्हारा हाथ हमारे ऊपर से उठ जाता है। ऐसा यज्ञ तुम्हारे देवों को स्वीकृत नहीं होता, उन्हें नहीं पहुंचता-सफल नहीं होता। हे प्रभो! अब जब कभी हम निर्बलता के वश अपने यज्ञों में कुटिलता व हिंसा का प्रवेश करने लगें और तुझे भूल जाएं तो हे प्रकाशक देव! हमारे अन्तरात्मा में एक बार इस वैदिक सत्य को जगा देना, हमारा अन्तरात्मा बोल उठे कि “हे अग्ने! जिस कुटिलता व

योग-ध्यान, साधना शिविर सम्पन्न

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) ज्यमपुर, जम्मू कश्मीर में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में 14 से 21 अक्तूबर तक निःशुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें हिमाचल प्रदेश, जम्मू कश्मीर, राजस्थान, दिल्ली, पानीपत, सोनीपत, उत्तराखण्ड आदि प्रान्तों से शिविरार्थियों ने भाग लिया। प्रातः काल श्रीराम भिक्षु एवं आश्रम के मन्त्री डाक्टर सुरेश जी साधकों को योगासन एवं प्राणायामादि का आभास कराते थे और फिर उसके बाद पूज्य महात्मा जी क्रियात्मक योगाभ्यास कराते थे। इस अवसर पर पूज्य महात्मा जी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ भी हुआ। आचार्य संदीप आर्य जी योगदर्शन का अध्ययन कराते थे और साधकों की शंकाओं का समाधान भी करते थे। वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी ने भी श्रोताओं को अपने प्रभावशाली प्रवचनों द्वारा उपकृत किया। उनके वैदिक-सन्ध्या पर किए गए प्रवचन श्रोताओं को अत्यधिक हृदयाग्रही लगे। मां सत्यप्रियायति, माता आनन्दायति और श्रीमती चंचल तथा अन्य शिविरार्थियों के समय-समय पर भजन होते रहे। आश्रम के प्रधान श्री भारतभूषण आनन्द, कार्यकारी प्रधान श्री विजय भगोतरा, महामन्त्री श्री यादवेन्द्र शर्मा, माता रामप्यारी और श्रीमती सुदेश आदि अन्य महानुभावों के सहयोग से शिविर बहुत ही सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ।

-भारतभूषण आनन्द, प्रधान

हिंसा-रहित यज्ञ को तुम सब ओर से घेर लेते हो, व्याप लेते हो, केवल यही यज्ञ देवों में पहुंचता है, अर्थात् दिव्य फल लाता है-सफल होता है।” सचमुच तुम्हें भुलाकर, तुम्हें हटाकर यदि किसी संगठन शक्ति द्वारा कुटिलता व हिंसा के जोर पर कुछ करना चाहेंगे तो चाहे कितना घोर उद्योग करें पर हमें कभी सफलता न मिलेगी।

-साभार-वैदिक विनय



गुरुकुल का आयुर्वेद महान घर-घर में मिले रोगों से निदान

**गुरुकुल च्यवनप्राश**

सभी के लिए स्वादिष्ट,
रुचिकर, पौष्टिक रसायन।

गुरुकुल पायोकिल

पायोरिया की आयुर्वेदिक औषधि
दांतों में खून रोके, मुंह की दुर्गन्ध दूर करे,
मसूड़ों के रोग, ढीले दांत ठीक करे।

गुरुकुल शतशिलाजीत सूर्यतापी

पुष्टीदायक, बलवर्धक
शरीर में नया खून और उत्साह का अनुभव

**गुरुकुल ब्राह्मी रसायन**

बुद्धिवर्धक, स्फूर्तिदायक, दिमागी कमजोरी दूर करे।

गुरुकुल मधुमेह नाशिनी गुटिका

मधुमेह एवं प्रत्येक प्रकार के प्रमेह में लाभदायक

गुरुकुल मधु

गुणवत्ता एवं ताजगी के लिए

गुरुकुल चाय

खाँसी, जुकाम, इन्फ्लूएंजा व
थकान में अत्यंत उपयोगी।

अन्य प्रमुख उत्पाद

गुरुकुल दाक्षारिष्ठ

गुरुकुल रक्तशोधक

गुरुकुल अश्वगंधारिष्ठ

गुरुकुल कांगड़ी फार्मसी, हरिद्वार डाकघर : गुरुकुल कांगड़ी-249404, जिला-हरिद्वार (उत्तरांचल) फोन : 0134-416073

शाखा कार्यालय : 63, गली राजा केदार नाथ, चावड़ी बाजार, दिल्ली-6, फोन : 23261871

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा आर. के. प्रिंटर्स प्रैस, टाण्डा फाटक जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।